ISBN:978-81-930154-6-0

International Conference

on

GLOBAL ENVIRONMENT: ISSUES, CHALLENGES AND SOLUTIONS

वैश्विक पर्यावरण: समस्याएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान

(An Interdisciplinary Approach) 23 rd September, 2016

Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaj's

New Arts, Commerce and Science College, Parner

Tal. Parner, Dist. Ahmednagar

Pin. 414 302 (Maharashtra)

Phone:- 02488-221537

Fax:- 02488-221535

Website:- www.newartsparner.com

Scanned with CamScanner

151	हिंदी साहित्य और पर्यावरण	शेख राजमोहम्मद	265
152	कलम मौसम बदलेगी	प्रा. सुनिता मोटे	266
153	घनकचरा–याचे व्यवस्थापन	श्री.एस.बी.भिंगारदिवे	268
154	जगतीकिकरणाच्या काळात पर्यावरणाचे बदलते स्वरुप	अंगद ज्ञानोबा भोसले	269
155	वाङ्मयीन पर्यावरण आणि इ.स.1975 ची मराठी कविता	डॉ.जी.आर.ढेंबरे,प्रा.एस.बी.धनले	270
156	ज्लसिंचन व्यवस्थापन आणि महाराष्ट्र	डॉ.एस.एम.भुजबळ	272
157	पर्यावरण संवर्धन आणि वन्यजीव संरक्षण कायदा	प्रा. फुलारी अर्चना	273
158	भारतीय अन्नसुरक्षा योजना – अभ्यास	कापसे धोंडीराम नवनाथ	275
159	भारतीय साहित्यातील पर्यावरण विषयक विचार	प्रा.डॉ.कार्तिकी नांगरे	278
160	पर्यावरण आणि भारतीय साहित्य	डॉ.रत्नप्रभा खैरनार	279
161	भारतीय साहित्यातील पर्यावरण विषयक विचार	डॉ.मिनाक्षी देव	281
162	भारतीय साहित्यातील पर्यावरण	प्रा. पंकज रघुनाथ देवरे	282
163	नागरी सहकारी बँकेच्या समोरील ज्वलंत समस्यांचा अभ्यास	प्रा.फोके समाधान	284
164	पर्यावरण संबंधी विकसीत राष्ट्रांचे राजकारण	प्रा.प्रकाश अभिमान डाके	285
165	मराठी कविता आणि पर्यावरणीय संवेदना	प्रा.अनिता हिंमतराव तायडे	287
166	महाराष्ट्रातील पर्जन्यप्रमाण व पाणीसाठा व्यवस्थापनावरील एक दृष्टिक्षेप	प्रा.रविंद्र विष्णु कारंडे	289
167	भारतीय साहित्य आणि पर्यावरण	डॉ.सुभाष देशमुख, सतिष आहेर	292
168	शतकातील वास्तववादी व दलित कवितेतील एक श्रेष्ठ काव्य	प्रा.सुर्यवंशी कविता	294
169	मराठी विज्ञान कथा–कादंब–यातील पर्यावरण विषयक विचार	प्रा.वंदना लव्हाळे	297
170	केदारनाथ सिंह की कविता मे पर्यावरण चेतना	डॉ.सदानंद भोसले	300
171	मध्ययुगीन संत कवियों के काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ.भुपेंद्र निकाळजे	302
172	जगतिक तापमान वाढ, हवामान बदल आणि त्याचे परिणाम	प्रा.प्रविण बोंद्रे	303
173	केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा.संतोष साहेबराव नांगरे	306
174	संत साहित्य व पर्यावरण एक चिंतन	प्रा.पाचारणे सारिका संतराम	307
175	हिंदी मराठी कविता मे पर्यावरण चेतना	डॉ.सौ.शैलजा पाटील	309
176	संतसाहित्य आणि पर्यावरण	प्रा.लक्ष्मण कोठावळे	311
177	जलव्यवस्थापन काळाची गरज	प्रा.प्रियंका दिवटे	312
178	"बारोमास" कादंबरीतील पर्यावरण विषयक विचार	प्रा.रुपाली कदम	313
179	पर्यावरणाबाबतच्या चळवळी व राजकीय सामाजिक भान	प्रा.गोकुळ मुंडे	314
180	केदारनाथ अग्रवाल की कविता में पर्यावरण संवेदयता	प्रा.मनोहर जमदाडे	316
181	आपत्ती निवारण:- कार्याध्दती व उपाययोजना	प्रा. भाऊसाहेब खंडू सांगळे	319

Scanned with CamScanner

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में पर्यावरण चेतना

संतोष साहेबराव नागरे, र.भ.अट्टल महाविदयालय,गेवराई, जि.बीड़।

मनुष्य प्रकृति की उपज है। वै ाानिक अविष्कारों, शहरीकरण, वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में उपजी उपभोक्तावादी संस्कृति में मनुष्य का प्रकृति के क्षेत्र में हस्तक्षेप बढ़ रहा है। जिससे उत्पन्न कई समस्याओं से आज का मनुष्य जू ा रहा है। उनमें से विश्व की प्रमुख समस्या है पर्यावरण। विश्व को बचाए रखने के लिए पर्यावरण को बचाए रखना बेहद जरुरी है। अतः हर मनुष्य को पर्यावरण के प्रति सचेत रहना जरुरी है।

केदारनाथ अग्रवाल पर्यावरण के प्रति सचेत कवि हैं। बढ़ता तापमान, सूखा, भूकंप, बाढ़, ऋतु परिवर्तन, विभिन्न प्रदूषण आदि पर्यावरण विषयक समस्याएँ मनुष्य के प्रकृति के हर क्षेत्र में अनाधिकार हस्तक्षेप का ही परिणाम है। दिनों दिन बढ़ती प्राकृतिक आपदाएँ हरे भरे जंगलों का कंक्रिट के जंगलों में तब्दिल होने का ही नतिजा है। पेड़ों का हमारे जीवन में अनन्यसाधारण महत्व है। पेड़ों को अपना अग्रज माननेवाले केदारजी का वृक्ष कटौती से चिंतित होना स्वाभाविक ही है। वृक्ष कटौती का विरोध करते हुए कवि केदार जी कहते हैं,

"इसे न काटो / कटु कुठार से मेरी काया कट जाएगी
ध्वस्त धाराशाई होने की / मेरी घड़ी निकट आएगी।"[१]

वृक्ष कटौती, शहरों के कल कारखानों, यातायात के वाहनों से निकलते धुएँ के कारण तापमान बढ़ रहा है। धूप के प्रकोप से धरती जल रही है। इसीकारण कवि को मई का महिना जुल्म का महिना लगता है। मई के महिने में लू लगने से कई लोग मौत के शिकार हो रहे हैं। मनुष्य के साथ ही कवि ने पशु पक्षियों को भी बढ़ते तापमान से चिंतित देखा है। धूप की मार से बेजान हुए पेड़ों की पीड़ा को व्यक्त करते हुए केदार जी कहते हैं,

वृक्ष कटौती एवं बढ़ते तापमान के कारण पानी की किल्लत की समस्या दिन ब दिन विकराल रुप धारण कर रही है। बरसात के दिनों में देश भर में टैंकर द्वारा पानी का प्रबंध किया जा रहा है। जिस पानी को जीवन कहा जाता है आज सूखाग्रस्त स्थितियों के कारण वह पैसा कमाने का साधन बन गया है। सरकार पानी की किल्लत से बचने के लिए कृतिम वर्षा का प्रयोग कर करोड़ों रुपये खर्च करती है, किन्तु वृक्ष संवर्धन कर इसका स्थायी समाधान नहीं खोजती। पानी के अभाव में प्रकृति सुन्दरी वैधव्य की पीड़ा भोग रही है। अन्नदाता किसान चातक के समान दृष्टि लगाए बादल की ओर देख रहा है। गरमी से भूना हुआ पहाड़ पानी के लिए रो रहा है। बारिश का इंतजार करते करते पशु पक्षी बेहाल हुए है, किन्तु उन्हें अब तक किसी भी दिशा से पानी का आमंत्रण नहीं मिला हैं। पानी के अभाव में प्यासे पशु पक्षियों के प्राण सूखते जा रहे है। केदार जी कहते हैं,

"आकुल है / प्यासे पशु पक्षी / नहीं मिला है उनको अब तक
किसी भी दिशा से पानी का आमंत्रण / होता है धीरज धनु भंजन।"[३]

बढ़ते औदयोगिकरण एवं शहरीकरण से शुध्द हवा जहरीली बनती जा रही है। प्रदूषित हवा में मनुष्य का दम घूट रहा है। जहरीली हवा के कारण मनुष्य का आर्युमान घटता जा रहा है। वायु प्रदूषण के कारण आसमान का निला रंग काले रंग में तब्दील हो रहा है। अतः हवा भी मनुष्य की तरह शहर से दूर चरागाह में जाकर गहरी नींद लेना चाहती है। हवा प्रकृति के संविधान में परिवर्तन कर प्रदूषण से मुक्ति चाहती है। केदार जी कहते हैं,

शहरों में त्योंहार बड़े धूम धाम के साथ मनाए जाते हैं। दीपावली तथा विभिन्न अवसरों पर पटाखे फोड़ने की हमारे यहाँ होड़ लगी रहती है। पटाखे फोड़ने से ध्वनि एवं वायु प्रदूपण होता है। चन्द क्षणों की खुशियों के लिए हम शान्त रात्रि को अशान्ति में बदल देते हैं। केदार जी कहते हैं,

"ये / बारुद बहादूर / छोटे छोटे पटाखे / आग को पकड़ते ही फट जाते।
धुँआ छोड़ते / धरती को / धुँधलाते / शांति भंग कर / ाट मर जाते।"[५]

आज जल प्रदूषण के कारण हमारे देश की नदियाँ अपवित्र बन गयी है। कारखानों से छोड़े गये जहरीली रसायनों, नालियों के गंदे पानी, अस्थि विसर्जन, फेंके गये कूड़े करकट आदि के कारण नदियों का जल प्रदूषित हो रहा है। प्रदूषित पानी से अनेक बिमारियाँ फैल रही है। नदी से लेकर सागर तक की यात्रा करते समय खेती के लिए इरतेमाल किये गये पानी से उर्वर जमीन बाँ ा बन गयी है। नदी का प्रदूषित जल सागर को जा मिलने से सागर की जैव विविधता नष्ट होती जा रही है। तीर्थयात्रा एवं पिकनीक के लिए सागर की यात्रा करनेवाले यात्री उसमें तरह तरह की चीजें फेंककर पानी को मैला कर देते हैं। इस दुख से दुखी होकर सागर का पानी खामोशी के साथ किनारे पर पड़ा रहता है। सागर की पीड़ा को वाणी देते हुए 'रामेश्वरम के तट पर' कविता में केदार जी कहते हैं,

"घुडदौड़ में / दौड़ा पानी / सागर में लहरें नहीं लड़ाता
पस्त है / थका / हारा / दुख का मारा / किनारे पड़ा बेचारा।"[६]

प्राकृतिक असंतुलन के कारण हर ऋतु अपनी विशेषताओं के विपरीत दृष्टिगत हो रही है। वर्षा ऋतु में कड़ी धूप गिर रही है। परिणामतः वर्षा ऋतु में भी नदियाँ सूखी ही रह रही है। बसंत नयी उमंग, नये चैतन्य, आनंद एवं उल्लास की ऋतु हैं। प्राकृतिक असंतुलन के कारण कवि को बसंत फिका लग रहा है। बिना फूल फूंदना के आये बसंत को केदारजी बेकार बसन्त की उपमा हुए कहते हैं,

"आया / लेकिन ठिठुरा ठिठुरा
बादल ओढे / बिना फूल फूंदना के आया
अब की बार बसन्त / इससे हमनें नहीं मनाया
पहली बार बसन्त। / चला गया बेकार बसन्त।"[७]

वै ाानिक अविष्कारों से जहाँ एक ओर मानव जीवन भौतिक सुख सुविधाओं से सम्पन्न हो गया है, वहीं दूसरी ओर वह अनेक समस्याओं से घिर चुका है। अणुबम, परमाणुबम, क्षेपणास्त्र आदि के कारण मनुष्य के सिर पर मौत हमेशा मँडरा रही है। बम प्रयोगों के कारण प्राकृतिक सम्पदा एवं सौन्दर्य नष्ट होता जा रहा है। साम्राज्यवादी शक्तियों की सत्ता स्पर्धा एवं आतंकवाद के कारण विश्व प्रकृति एवं पर्यावरण को खतरा है। आज बम के रुप में धरती पर साक्षात यम अवतरित होने से प्रकृति मुरदा बन गयी है। जिससे भूगोल एवं खगोल डाँवा डोल हो रहे हैं। केदार जी कहते हैं,

"वि ाान बरसता है गोले / संहार प्रतिक्षण होता है
यमराज अवनि पर आया है / हो गयी प्रकृति भी अब मुरदा।"[८]

केदार जी साम्राज्यवादी शक्तियों की युध्द तैयारियों को रोककर पर्यावरण संवर्धन पर जोर देते हैं। डॉ.रामविलास शर्मा इस सन्दर्भ में ठीक ही कहते हैं, "साम्राज्यवादी शक्तियाँ प्रकृति के नैसर्गिक व्यापार में दखलंदाजी करती है और उनकी यह दखलंदाजी काल की पंखों की मार से अधिक बर्बर है। सागर, पृथ्वी, आकाश की रक्षा के लिए जनता का संगठित होकर महायुध्द की तैयारियों को रोकना बहुत जरुरी है। केदार प्रत्यक्ष रुप से इन तैयारियों का विरोध करें चाहें न करें, वे अपनी कविता से मनुष्य के जिन संस्कारों को निखारते हैं, वे इसी दिशा में प्रेरित करते हैं।"[९] आतंक, हिंसा एवं युध्द किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। अतः गोलियाँ चलाकर बम गिराकर हमें शान्ति मिलनेवाली नहीं है। विश्वशांति एवं विश्वपर्यावरण की सुरक्षा के लिए केदार जी साम्राज्यवादी शक्तियों को सचेत करते हुए कहते हैं,

Scanned with CamScanner

सारांश : केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति सौन्दर्य के अनुपम कवि हैं। बढ़ते प्राकृतिक असन्तुलन से केदार चिंतित है। यह चिंता उनकी कविता में बार बार देखने को मिलती है। केदारजी प्रकृति की हर इकाई के प्रति सचेत कवि हैं। स्वच्छ एवं सुंदर पर्यावरण के हिमायती केदार जी के काव्य में पर्यावरण चेतना अपने चरम रुप में पायी जाती है।

संदर्भ ग्रंथ :

१) सम्पा. अशोक त्रिपाठी, कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह, पृ. २०४
२) केदारनाथ अग्रवाल, हे मेरी तुम, पृ. ६०
३) केदारनाथ अग्रवाल, बोले बोले अबोल, पृ. ७२
४) केदारनाथ अग्रवाल, पंख और पतवार, पृ. ११५
५) केदारनाथ अग्रवाल, पुष्पदीप, पृ. ३७

संत साहित्य व पर्यावरण एक चितंन

पाचरणे सारिका संतराम, पी. एच. डी. संशोधक विदयार्थिनी, अहमदनगर महाविदयालय, अहमदनगर

महाराष्ट्र ही संताची भुमी आहे. संतांनी आपल्या वाणीने संपूर्ण महाराष्ट्राचे प्रबोधन केले. इतकेच नाही तर बाराव्या तेराव्या शतकात बोलीभाषेतून आपल्या वाङ्मयनिर्मितीला समृध्दपणाने सुरुवात केली. संत बहिणाबाई म्हणतात,

ाानदेवे रचिला पाया। उभारिले देवालया।।
नामा तयाचा किंकर। तेणे केला हा विस्तार।।
जनार्दनी एकनाथ। खांब दिला भागवत।।
भजन करा सावकाश। तुका ाालासे कळस।।छ

वारकरी पंथाचा पाया संत ाानेश्वरांनी घातला इतर संतांनी या पंथाचा विस्तार केला. संत तुकाराम महाराजांनी त्यावर कळस चढविला. हि कळसाची दिव्यता संत तुकाराम महाराजांमध्ये सहजा सहजी प्राप्त ाालेली नाही. संत तुकाराम यांच्या वाणीतुन बाहेर पडणारा प्रत्येक शब्द हा काव्य होत होता. त्यांची **अभंगवाणी** ही उस्फूर्त होती . ते म्हणतात,

च्तुका म्हणजे ारा। आहे मुळीचाचि खरा।।छ
(शा.गा.३५००)

या अभंगवाणीच्या साहाय्याने संत तुकाराम महाराजांनी आपले अनुभव व्यक्त केले. समाजातील अनेक विषय सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक ही सर्व परिस्थितीही त्यांनी मांडली विषयातील वैविध्य आणि अनुभव प्रामान्य यामळे आजही त्यांची अभंगावाणी समाजासाठी एक प्रेरक शक्ती आहे. या अभंगवाणीच्या आधारे संत तुकाराम महाराजांनी नकळत पर्यावरण आणि स्वास्थ या विषयावर मत व्यक्त केले आहे.

समाजामध्ये पर्यावरण संवर्धनाची जाणीव निर्माण ाली आहे. त्यामुळे **ाडे लावा , ाडे जगवा, पाणी अडवा, पाणी जिरवा** अशी विकासाची कामे गावांमधून चालु आहेत.वृक्षतोडणेमुळेच जमिनीची धुप मोठया प्रमाणात ाली. पावसाचे प्रमाण कमी ाले. ऑक्सीजनचे प्रमाण कमी होण्याची भीती निर्माण ाली आहे.म्हणुन आज पर्यावरण संवर्धनासाठी वृक्षलागवडीचे महत्व वाढले आहे. मात्र हे वृक्षसंवर्धन, लागवडीचे महत्व संत तुकाराम महाराजानी सतराव्या शतकामध्येच सांगून ठेवले आहे. ते म्हणतात.

वृक्षावल्ली आम्हां सोयरी वनचरे।
पक्षीही सुस्वरे आळविती ।।धृ।।
येणे सुखे रुचे एकांताचा वास।
नाही गुण दोष अंगा येत ।।१।।
आकाश मंडप पृथिवी आसन।
रमे तेथे मन क्रीडा करी।।२।।
कथा कुमंडलु देहउपचारा।
जाणवितो वारा अवसरु।।३।।
हरिकथा भोजन पखडी विस्तार।
करोनि प्रकार सेंवु रुची।।४।।
तुका म्हणे होय मनासी संवाद ।
आपुलाचि वाद आपणासी ।।५।।छ

(शा.गा. २४८१)

यामधुन संत तुकाराम महाराज सांगतात की, वृक्ष , वेली, वनात राहणारे प्राणी, कंठाने सुस्वर गीत आळविणारे पक्षीच आमचे सगेसोयरे आहेत.एकांतामध्ये त्यांच्याबरोबर राहिल्याने कोणतीही गुण दोष लागत नाही. म्हणजेच संत तुकाराम महाराजांनी वृक्षांनाच आपले सोयरे मानले होते. वृक्ष हा त्यांचा निःस्वार्थी मित्र होता. आपलाही आहे. कारण वृक्षापासूनच आपणला सावली फळे मिळतात. पावसाचे प्रमाणही वाढते, तरीही माणुनस आज वृक्षतोड करत आहे. वृक्षतोडीमुळे पक्षांची घरटी नाश पावत चालली आहे.वृक्षसुध्दा देवाचे मंदिरच आहे. वृक्षवनराईमध्ये हरिकथा भजनाचा आनंद मिळतो. मन एकाग्र करता येते. आपल्याला आपल्याशीच संवाद साधता येतो.

Scanned with CamScanner